परमेश्वर का अद्भुत प्रेम और अनुग्रह!

सारा के पत्र में आपका स्वागत है !

प्रभु यीशु के बहूमुल्य नाम में, जो नाम सब से ऊपर है उसमें आपको नमस्कार !

एक बार पिताजी ने अपने पुत्र को जन्म दिन का उपहार दिया, यह अपने आपसे बनानेवाली एक नांव थी। छोटे बच्चे ने नक्काशी का काम कर काफी घंटे उसे एक सुंदर नांव बनाने में बिताए। तब उसने उसे पास की नदी में चलाने के लिए ले गया। हर रोज स्कूल के बाद उस नांव को नदी में चलाने में उसे मजा आने लगा। एक दिन, जब उसने उसे खेलने के लिए नदी में डाला, तब अचानक से जोर की हवा ने उसे तुरन्त उससे दूर कर दिया। वह नदी के किनारे किनारे दौड़ा के उसे पास ला सके लेकिन वह उसे ला नहीं सका। तेज हवा और जोर के पानी के प्रवाह ने उसे उससे दूर कर दिया। उसकी नांव खो जाने से उस बच्चे का दिल टूट गया, वह इस बात को जानता था कि दूसरी नांव को बनाने के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ेगी।

दूर नदी के निचले भाग में, एक व्यक्ति को वह नांव मिली। उसने उसे साफ किया, अपने गांव ले गया और दूकानदार को बेच दिया। कुछ दिनों के बाद, जब वह बच्चा गांव में घुम रहा था तब उसने दूकान की खिड़की से उस नांव को देखा। जब वह नजदिक गया तब वह नांव उसे हूबहू अपनी खोई हुई नांव जैसी लगी। उस दुकान में प्रवेश कर, उस नांव को नजदिक से देखते हुए, उसने दुकानदार से कहा कि वह नांव उसकी है, इस पर उसका छोटा चिन्ह भी है, लेकिन वह उस दुकानदार को साबित नहीं कर सका कि यह उसी की नांव है। उस दुकानदार ने उससे कहा कि पैसे चुकाकर ही यह नांव उसकी हो सकती है। उस बच्चे को वह नांव चाहिए थी इसलिए उसने वहीं किया जो उसे कहा गया था। "छोटी नांव, अब तुम फिर से मेरी हो! एक बार मैंने तुम्हे बनाया लेकिन तुम खो चुकी थी, अब मैंने तुम्हे फिर से खरीदा है।"

उसी प्रकार, बिना किसी धर्म या जाति के आधार पर, **हम सब** नांव के समान है। एक बार सर्व शक्तिमान परमेश्वर ने हमें बनाया। लेकिन पाप ने हमें परमेश्वर से दूर कर दिया और हम शैतान के अधिकार में खो गए। लेकिन परमेश्वर हमारे पापों को माफ करने और हमें वापस लेने के लिए तैयार है – ताकि वह हमें अपने पुत्र प्रभु यीशु मसीह के पापरहित मूल्यवान लहू और जीवन के द्वारा मुफ्त का दान अनन्त जीवन दे सके।

प्रिय मित्र, मैं चाहता हूँ कि आप मेरे इस पत्र को लिखने के पीछे के आशय को कि मैं आपका धर्म/कलीसिया या नहीं बदलना चाहता या आपका धर्म परिवर्तन मसीहीयत में नहीं करना चाहता लेकिन केवल आपको बताना चाहता हूँ कि **आप भी** कैसे इस मुफ्त के वरदान अनन्त जीवन को हासिल कर सकते है – कि यदि आज आपकी मृत्यु होती है तब आपको कैसे निश्चिंती मिलेगी कि आप स्वर्ग जाओगे! क्या आपने कभी ऐसे जीवन की आशा की है जो स्वर्गीय शांती, आनन्द और प्रेम से भरपूर हो? क्या आप निराशा, चिंता, अपराध, शर्म, भय, आशाहिनता, अकेलापन यहां तक की मृत्यु के या आत्महत्या के डर से परेशान है?

प्रिय मित्र, आप **आज** मसीह में **नए जीवन** का आनन्द उठाने की शुरुआत कर सकते हैं। परमेश्वर ने पहले से ही इस **मुफ्त के दान** को आपको दे दिया है! आपको केवल इसे प्राप्त करना है। इसे जाननें, समझनें के लिए इस पत्र को सावधानीपूर्वक पढ़ें और इस वरदान को अपना बनाएं, अब...

बायबल कहती है .. जिस सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया, उसी ने पृथ्वी की मिट्टी से आदम को भी अपने स्वरूप और अपनी समानता में बनाया। तब परमेश्वर ने उसकी नथनों में जीवन की सांसों को फूंका और मनुष्य जीवित प्राणी बन गया, परमेश्वर ने इस प्रथम मनुष्य को 'आदम' नाम दिया, परमेश्वर ने पूर्व में एदन नामक एक वाटिका बनायी और आदम को उसमें काम करने के लिए और उसकी देखभाल करने के लिए रखा। (उत्पति 1:27; 2:7-8;15)

परमेश्वर ने उस वाटिका में हर तरह के सब्जीयों को बढ़ने दिया – हर प्रकार के बीजों वाले पौधे बढ़ें जिसके द्वारा फलों की उत्पति होती है – भले और बूरे के ज्ञान के फल का पेड़ वाटिका के बीच में लगाया गया था। परमेश्वर ने आदम से कहा कि वह किसी भी पेड़ के फल को खा सकता है लेकिन भले और बूरे (मृत्यु) के पेड़ के फल को **नहीं खा सकता**, यदि वह उसमें से खाएगा तब निश्चित रुप से उसी दिन उसकी मृत्यु होगी। जब परमेश्वर ने देखा कि आदम अकेला है तब उसने सहायक के रुप में उसे एक साथी (हव्वा) दिया। वे दोनों उस एदन की वाटिका में रहने लगे। (उत्पति 1:11-12,29,2:9,15-25)

आदम और हव्वा ने उस फल को खाया जिसको परमेश्वर ने मना किया था, इस प्रकार उन्होंने परमेश्वर के विरोध में अनाज्ञाकारिता के द्वारा पाप किया। इसके परिणाम स्वरूप वे स्त्रापित हुए और आत्मिक रिती से वे मर गए (वे परमेश्वर से अलग हो गए और एदन की वाटिका से निकाल दिए गए। आदम 930 वर्षो तक जीवित रहा, उसके बाद उसकी मृत्यु हुई (शारीरिक तौर पर), (उत्पति 3:23-24; 5:5) **<** अधिक जानकारी के लिए, मेहरबानी से सारा के पत्र के दूसरे भाग को पढ़ें। **>**

बायबल कहती है ... "...इसलिए जो प्राणी पाप करेगा वह मर जाएगा।" (यहेजकेल 18:4बी, 20)

"पाप को मजदूरी (किमत) मृत्यु है।" (रोमियों 6:23ए)

"इसलिए जैसा पाप (परमेश्वर के प्रति अनाज्ञाकारिता; परमेश्वर की व्यवस्था तोड़ना) एक मनुष्य (आदम) के द्वारा जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आयी, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गयी, इसलिए कि सब ने पाप किया।" (रोमियों 5:12)

"वे सब भटक गए, वे सब भ्रष्ट हो गए, कोई सुकर्मी नहीं, एक भी नहीं।" (भजन संहिता 14:3; रोमियों 3:12)

"निसंदेह पृथ्वी पर कोई ऐसा धर्मी मनुष्य नहीं जो भलाई ही करे और जिससे पाप न हुआ हो।" (सभोपदेशक 7:20)

"कोई भी धर्मी नहीं, एक भी नहीं।" (रोमियों 3:10)

बिना किसी धर्म/जाति/लिंग का पक्षपात किए बिना, इस संसार के सभी लोगों – भूतकाल, वर्तमान, भविष्यकाल में आदम से पैदा हुए है। इसलिए सभी पापी है और स्त्राप के भागी है, शैतान और मृत्यु के गुलाम है, और उनका अंत नर्क में है – जो पाप के लिए अनन्तकाल की सजा है, **लेकिन** ....

"...परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है।" (रोमियों 6:23बी)

(अनन्त जीवन का मतलब परमेश्वर के क्रोध, पाप और पाप के बदले नर्क की सजा से छुटकारा है, और हमेशा के लिए (अनन्तकाल) स्वर्ग में यीशु मसीह के साथ रहना है।)

सर्वशक्तिमान परमेश्वर जो पाप से घृणा करता है लेकिन पापियों से पश्चाताप की आशा करता है, जिसने हम से इतना प्रेम किया कि हमें उसके क्रोध से और पाप और नर्क की सजा से बचाने (उध्दार) के लिए उसने अपना एकलौता पुत्र पृथ्वी पर भेज दिया, ताकि हम अनन्त जीवन से आशीषित हो और हमेशा के लिए यीशु मसीह के साथ रहे।

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करें वह नाश न हो लेकिन अनन्त जीवन पाएं।" (यूहन्ना 3:16)

यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र मनुष्य के पुत्र के तौर पर पापरहित पैदा हुआ और बिना पाप के जीवन बिताया। यीशु हमारे पाप उठा लिए और हमारे पापों के लिए अपना बहुमूल्य लहू बहाया और इस तरह वह **हमारे स्थान पर**, मारा गया। यीशु मसीह गाड़ा गया और वचन के अनूसार परमेश्वर ने उसे तिसरे दिन मृतकों में जिलाया। उसने अपने बदले में हमें किमत देकर खरिद लिया। (देखें मत्ती 20:28; मरकुस 10:45; रोमियों 5:8,10:9 बी; 1 कुरिन्थियों 15:3) **यह परमेश्वर को अद्भुत प्रेम है!**

"क्योंकि शरीर का प्राण लोहू में रहता है, और उसको मैं ने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिये दिया है, कि तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित किया जाए, क्योंकि प्राण के कारण लोहू ही से प्रायश्चित होता है।" (लैव्यवस्था 2 17:11; उत्पति 9:4)

"...और बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती।" (इब्रानियों 9:22)

" जो पाप से अज्ञात था, उसी (यीशु को) को उस ने (परमेश्वर ने) हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं। (2 कुरि.5:21)

परमेश्वर ने हमें अपने पुत्र के द्वारा अनन्त जीवन (उध्दार) मुफ्त के वरदान के रुप में दे दिया। अब आपको यह मुफ्त का वरदान उध्दार **हासिल** करने के लिये क्या करना होगा? **अब** ...

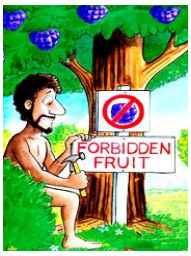

जब आदम ने मना किए हुए फल को खाकर परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी, तब उसने परमेश्वर के विरोध में पाप किया और 'पापी' बन गया। परमेश्वर द्वारा कही गयी (आज्ञा) के कारण 'जिस दिन तुम इसका फल खाओगे उस दिन तुम मरोगे' – आदम आत्मिक तौर पर मर गया। इस दुनिया के सब लोग इस पापी आदम की संतान है – इसका मतलब, उस **पापी आदम** से हम सभी उत्पन्न हुए है इसलिये हम पापी है!

अधिक स्पष्टता के लिये, परमेश्वर ने – मनुष्य, पेड़ और पशु जैसे सभी जीवित चीजों को अपने ही समानता में पुनर–उत्पादन (पीढ़ि) के **बीज के साथ** बनाया, परमेश्वर ने आदम को अपने ही अनुरुप और समानता में बनाया ताकि आदम 'अपने ही समानता' में संतानों की उत्पति कर सके। (उत्पति 1:11-12,25-27) परमेश्वर की आज्ञा तोड़ने के पाप ने **आदम की आत्मा को मार डाला** (वह परमेश्वर सि अलग हो गया), और आदम को यह जान पड़ा कि वह नंगा है। जब आदम ने मना किए गए भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल खाया (मृत्यु के पेड़ का फल), पाप आदम में प्रवेश कर गया और मना किए गए फल के **दूषित बीज** ने आदम के (शुक्राणु) को दूषित कर डाला। आदम की अनाज्ञाकारिता ने शैतान की आज्ञा मानी – इस प्रकार से आदम ने परमेश्वर के स्वभाव (परमेश्वर की महिमा) को खो दिया और 'शैतान से प्राप्त स्वभाव' अंगीकार कर लिया – हम पाप करने के कारण पापी ठहरे लेकिन, क्योंकि हम पापी आदम की संतान है इसलिये **हम पाप में पैदा हुए है** – हम पाप में ही पैदा हुए हैं ! **<** अधिक जानकारी के लिए, मेहरबानी से सारा के पत्र का दूसरे भाग को पढ़ें। **>**

"...सभीं ने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित है।" (रोमियों 3:23)

एक पापी अपने ही समान पापी पीढ़ि का उत्पादन करता है! इस प्रकार से प्राप्त पापी स्वभाव के कारण, आदम ने अपनी पीढ़ि (संतानें) पापी स्वभाव में पैदा की। यह पापी स्वभाव आदम से उसकी पीढ़ि में आया और अंततः जन्म से हम में आया। यह पापी स्वभाव पहले ही से पाप की तरफ हमारी स्थीति को आकर्षित करता है। क्योंकि इसी पापी स्वभाव के कारण हमारी पाप करने की आदत है – इसका मतलब, **पाप नहीं करना** हमारे लिये **असंभव हो गया है।** (उत्पति 5:3) इसलिये पाप के कारण, बिना किसी धर्म, जाति या लिंग को पक्षपात किए, सभी लोग परमेश्वर के सामने अशूध्द/अपवित्र (गंदे) हो गए।

"क्योंकि प्राचीनकाल ही से तुझे छोड़ कोई और ऐसा परमेश्वर न तो कभी देखा गया और न काल से उसकी चर्चा सुनी गई जो अपनी बाट जोहनेवालों के लिये काम करे।" (यशायाह 64:6)

"अशुध्द वस्तु से शुध्द वस्तु को कौन निकाल सकता है? **कोई नहीं**।" (अय्युब 14:4)

परमेश्वर पाप से घृणा करता है, सभीं दूष्टता की जड़ पाप है। यह पाप है जो हमें परमेश्वर से अलग करता है। (यशायाह 59:2) जिस प्रकार से काम करने के द्वारा हम पैसे कमाते हैं, उसी प्रकार पाप करने के द्वारा हम मृत्यु को प्राप्त करते हैं, (रोमियों 6:23ए) **स्त्राप** और **मृत्यु** – दोनों शारीरिक और आत्मिक – मनुष्यजाति में पाप के द्वारा आए हैं। प्रभु यीशु मसीह ने कहा, यदि कोई स्वर्ग आना चाहता है, उसे आदम के द्वारा जो **पापी स्वभाव** (आदम के कामों के द्वारा मिला है) प्राप्त हुआ है, उसे **फिर से पुनर–जीवित – नए से जन्म** लेने की जरुरत है। यीशु ने जवाब दिया, "मैं तुमसे सच सच कहता हूँ कि जब तक कि कोई नए सिरे से न जन्में तब तक वह परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकता।" (यूहन्ना 3:3) – मै तुम से सच सच कहता हूँ कि जब तक कोई पानी और आत्मा से जन्म नहीं ले लेता तब तक वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।" (यूहन्ना 3:5) नया जन्म यानि **यीशु मसीह में** एकदम नया व्यक्ति बन जाना है।

(यहा पर **पानी** का मतलब परमेश्वर का वचन है, जिसे आप यहाँ पढ़ते हैं, और **आत्मा** यानि परमेश्वर की पवित्र आत्मा है।)

इस संसार के सामान्य पैदाईश (जीवन) में चाहे वह मनुष्य, जानवर या पेड़ हो उसमें बीज (शुक्राणु) और अंडों (डिंब) की आवश्यकता होती है। यही बातें आत्मिक दुनिया में भी होती है; यहाँ पर "अंडे" हमारी आत्मा है और "बीज" अनन्तकालिन विश्वसनीय परमेश्वर का वचन है।

"क्योंकि तुमने नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है।" (1 पतरस 1:23)

परमेश्वर का वचन किसी भी दोधारी तलवार से तेज है, जब पापी उसे सुनता या परमेश्वर के वचन को सुनता है तब उसके दिल तलवार के सामन छिद जाते है। "क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव और आत्मा को , और गांठ गांठ, और गूदे गूदे को अलग करके, आर पार छेदता है, और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।" (इब्रानियों 4:12)

फिर, परमेश्वर का आत्मा उन्हें (यहाँ आपको) "पाप" और "धार्मिकता" और "न्याय" के बारे में दोषी ठहराएगा। पवित्र आत्मा पढ़नेवालों को सहायता करेगा कि वह समझे कि वह पापी है और जब तक कि वह यीशु मसीह की धार्मिकता जो मुफ्त वरदान है उसे प्राप्त नहीं कर लेते तब तक वह न्याय के कारण नर्क में नाश होगे। "और वह (पवित्र आत्मा) आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा।" (यूहन्ना 16:8-11) – < अधिक जानकारी के लिये, मेहरबानी से सारा के पत्र के दूसरे भाग को विस्तार से पढ़ें >

इसका मतलब यह है कि जब व्यक्ति (यहाँ पर आप) परमेश्वर के वचन को पढ़ते या सुनते हो तब पवित्र आत्मा उस व्यक्ति को कायल करेगा या समझने के लिये सहायता करेगा कि इस संसार के सब लोग पापी है और वे नर्क की ओर जा रहे है। आप जब इसे समझते हैं, इस सच्चाई पर विश्वास करते हैं, और परमेश्वर के आगे अपने आपको नम्र करते हैं, और **सीधे परमेश्वर के सामने** अपने पापों को अंगीकार (उसके प्रति दुःख व्यक्त करते हैं या मान लेते हैं) करते हैं और ईमानदारी से उसके प्रति पश्चाताप करते हैं। यदि आप ऐसा करते हैं, तब उसके अनुग्रह में, परमेश्वर :

- आपके हर पापों को **माफ करेगा** (चाहे वह बड़ा पाप हो या छोटा हो)
- आपको भरोसा करने के लिये **विश्वास** देता है कि यीशु मसीह आपके लिये आया है, आपके पापों के बदले में अपना बहूमुल्य लहू बहाया है, और आपके बदले में आपके स्थान पर मृत्यु पायी है।
- आपको अपने जीवन में यीशु मसीह को अपने जीवन का प्रभु और व्यक्तिगत तौर पर मुक्तिदाता ग्रहण करने और मानने के लिये **आपको अनुग्रह** (जिसके लिये आप योग्य नहीं हैं) प्रदान करता है।

इसका मतलब, यद्यपि परमेश्वर जानता है कि हम पापी है, फिर भी वह चाहता है कि हम उसके साथ हमारे पाप और उससे **फिरने** और परमेश्वर की तरफ जाने और पवित्र, विश्वासयोग्य और उसके वचन के अनूसार जीवन जीने के लिये सहमत हो। परमेश्वर हमारे इमानदार अंगीकार के इंतजार में है (कहें कि आपको दुःख है) कि वह माफ करे और आपको शुध्द करे और यीशु मसीह के लहू से सफेद करें।

"यदि हम अपने पापों को मान ले, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुध्द करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।" (1 यूहन्ना 1:9)

"आओं, हम आपस में वादविवाद करें, तुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हो, तौभी वे हिम की नाई उजले हो जाएंगे, और चाहे अर्गवानी रंग के हो, तौभी वे ऊन की नाई श्वेत हो जाएंगे।" (यशायाह 1:18)

मान लीजिए कि आपने खाने के लिये भोजन पर किसी **मेहमान** को बुलाया, तब आप क्या करेंगे? आप अपने घर को अधिक साफ करेंगे, और जब मेहमान आकर आपके घर के दरवाजे पर खटखटाते है, तब आप दरवाजा खोलेंगे और कहेंगे, **"मेहरबानी से भीतर आए,"** ठीक है?

जिस प्रकार से हम अपने मेहमान को भोजन परोसने के लिये अपने घर को साफ चाहते हैं, उसी तरह प्रभु यीशु मसीह को अपने दिल में ग्रहण करने के लिये अपने दिल को साफ करना चाहिए। पहला कदम यह है कि हम इस बात को पहिचाने कि हमारा दिल "गंदा" (पापों से भरा) है। सही मायने में, हमारे दिल इतने खराब है कि हम उन्हें देख भी नहीं सकते कि वे कितने भयंकर है !

"मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देनेवाला होता है, उस में असाध्य रोग लगा है, उसका भेद कौन समझ सकता है?" (यिर्मयाह 17:9)

"जो मनुष्य में से निकलता है, वही मनुष्य को अशूध्द करता है, क्योंकि भीतर से अर्थात मनुष्य के मन से बुरी बुरी चिन्ता, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान और मूर्खता निकलती है। ये सब बातें भीतर ही से निकलती है और मनुष्य को अशुध्द करती है।" (मरकुस 7:20-23)

सच्चाई यह है, जिस प्रकार से "हम" अपने घर को साबुन और पानी से साफ करते हैं, उस प्रकार हम अपने दिल को "अपने आप से" साफ नहीं कर सकते। हमें अपने दिल को साफ करने के लिये एक पेशेवर - **कूशल व्यक्ति** की जरुरत है। केवल एक ही कूशल व्यक्ति हमारे दिल को साफ कर सकता है वह **यीशु** है; और जो चीज हमारे पापी दिल को साफ कर सकती वह पापरहित **यीशु मसीह का लहू** है।

"...प्रभु यीशु मसीह का लहू हमें सब पापों से शुध्द करता है।" *(1 यूहन्ना 1:7)*

"हम को उस में उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा, उसकेउस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है। जिसे उस ने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया।" (इफिसियों 1:7-8)

"क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बापदादों से चला आता है उस से तुम्हारा छुटकारा चान्दी सोने अर्थात नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात मसीह के बहूमुल्य लहू के द्वारा हुआ।" (1 पतरस 1:18-19)

"मेहमान" केवल एक संक्षिप्त मुलाकात के लिये आता है। यीशु मेहमान नहीं है। यीशु हमारे दिल (जीवन) में - संक्षिप्त मुलाकात के लिये नहीं, लेकिन हमारे जीवन के नए प्रभु के रुप में सच्चाई में अपनी पवित्र आत्मा के द्वारा मार्गदर्शन करने **हमेशा के लिये रहने** आते हैं।

हमारा शरीर घर और हमारा दिल दरवाजा है। यह भीतर से बन्द है। हमें उसे खोलना चाहिए, दरवाजा (हमारे दिल का) खोले, और **व्यक्तिगत** रुप से यीशु को अपने दिल में ग्रहण करे।

"देखों, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करुंगा, और वह मेरे साथ।" (प्रकाशित वाक्य 3:20)

प्रिय मित्र, अब क्या आप मेहरबानी से **यीशु** को अपने दिल में आमंत्रित करोगे? इसमें एक मिनिट से भी कम समय लगता है!

बायबल वादा करती है... "...कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू और निश्चय उध्दार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उध्दार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है।" (रोमियों 10:9-10)

मेहरबानी से निचे दिए गए छोटे वाक्यों को **सावधानीपूर्वक** पढ़ें, विश्वास करे और कहे (अंगीकार करे), ताकि आप उन्हें अपने कानों से सुन सके। इन्हें गंभीरतापूर्वक अपने **दिल** से कहना आवश्यक है:

परमेश्वर, अब मैं यीशु को अपना प्रभु और उध्दारकर्ता के रुप में अंगीकार करता हूँ।
मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु ने मेरे पापों के लिये अपने बहूमुल्य लहू को बहाया और मुझे बचाने के लिये मेरी जगह मारा गया, यीशु मसीह गाड़ा गया और परमेश्वर ने यीशु को वचन के अनुसार तिसरे दिन जिलाया,
मैं पापी हूँ और मुझे अपने पापों के लिये दुःख है, मेहरबानी से मेरे पापों को माफ कर और यीशु के लहू से धोकर मुझे शुध्द कर,
मेरे प्रभु यीशु, मेहरबानी से मेरे दिल में आए, अब, मेहरबानी से मुझे अपनी पवित्र आत्मा से भर और मुझे सच्चाई में अगुवाई कर।
हे प्रभु यीशु मुझे बचाने के लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

प्रिय मित्र, यदि आप ने सचमुच विश्वास किया है और गंभीरतापूर्वक उन छोटे वाक्यों को अपने दिल से कहा है, तब मुझे आपसे एक साधारण सवाल पूछने दे, मेहरबानी से सोचे और मुझे बताएः

अब, यीशु कहाँ है?

-
-
-
-

यदि आपका जवाब, "**अब, यीशु मेरे दिल में है,**" तब मैं विश्वास करता हूँ कि आपने यह कहा है (यदि आपका जवाब नहीं है, तब उन वाक्यों को **फिर** सावधानीपूर्वक कहें, और **अब यीशु को अपने दिल में आमंत्रित करे;** और पढ़ना जारी रखे...)

हाँ, अब यीशु आपके दिल में है, जब हमें कुछ मिलता है तब हम कहते है "धन्यवाद" है न? धन्यवाद देना विश्वास की शुध्द अभिव्यक्ति है। इसलिये मेहरबानी से कहे, **"मेरे दिल में आने के लिये, धन्यवाद यीशु!"**

जब तक कि आपने यीशु को अपने दिल में अपना प्रभु और मुक्तिदाता के रुप में ग्रहण नहीं किया था तब तक सर्व शक्तिमान के साथ आपका रिश्ता "सृष्टिकर्ता और सृष्टि के रुप में था लेकिन अब "**प्रेमी पिता** और उसके **प्रेमी पुत्र/पुत्रीयां** के रिश्ते में बदल गया है।" साथ ही, जब तक कि आपने यीशु को ग्रहण नहीं किया था, तब तक आप शैतान के अधिकार में थे और शैतान आपका पिता था, (मत्ती 3:7,12:34, 23:33; लूका 3:7; यूहन्ना 8:44) अब, आपका नया जन्म हुआ है और आप पर परमेश्वर पिता का अधिकार है जो दया का धनी है, जिसने अपने महान प्रेम के साथ आपसे प्रेम करता है। (इफिसियों 2:4) क्या अब आपके दिल में आनन्द नहीं है, क्योंकि आपके दिल में यीशु आ गया है? हमेशा परमेश्वर के प्रति धन्यवादित रहे! जो उसके पुत्र यीशु मसीह के द्वारा उसके पास आता है, उसे वह कभी नहीं छोड़ता! हमें यह जानकारी होना चाहिए कि परमेश्वर ने हमारे लिये क्या किया है और हम उसे अपने संपूर्ण दिल, प्राण और शक्ति और मन से प्रेम करे। (लूका 10:27) "जिस (परमेश्वर पिता) ने अपने निज पुत्र को भी (यीशु) न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया वह (परमेश्वर पिता) उसके साथ हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा?" (रोमियों 8:32) "परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों 5:8)

एक बार शारीरिक रुप से आप अपने मातापिता के द्वारा इस संसार में पैदा हुए। अब आप आत्मिक रुप से फिर सर्व शक्तिमान परमेश्वर के अनन्त घराने में परमेश्वर की संतान के रुप में पैदा हुए है- परमेश्वर के हर क्रोध से **बचाए गए** है। इसलिये प्रिय भाई/बहन **आनन्द मनाएं, खुशियां मनाएं!** नया जन्म यानि **मसीह में** एकदम नया व्यक्ति। यही बात परमेश्वर हम सब के लिये चाहता है। नया जन्म होना सब आश्चर्यकर्मो में महान है!

"इसलिये जो कोई मसीह यीशु में है, वह नई सृष्टि है (पूरी तरह से नई सृष्टि); पुरानी बातें (पुरानी नैतिक और आत्मिक स्थीति) बीत गयी, **देखों, वे सब नई हो गयी है!** (2 कुरिन्थियों 5:17)

सर्व शक्तिमान परमेश्वर की संतान होने के लिये किसी भी धर्म के किसी भी व्यक्ति के लिये केवल एक शर्त है, "परन्तु जितनों ने उसे (यीशु को) ग्रहण किया उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर भरोसा रखते हैं; वे न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए है।" (यूहन्ना 1:12,13)

इस प्रकार से कोई भी व्यक्ति विश्वास के द्वारा और उसके प्रेम और अनुग्रह से - जिसे उसने अपने पुत्र के द्वारा सारी मनुष्य जाति के लिये तैयार किया है- मुफ्त का वरदान परमेश्वर का अनन्त जीवन प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार से व्यक्ति **नया जन्म** और **उध्दार** पा सकता है। यह परमेश्वर के "**उध्दार की सरल योजना** है" ! यह सबसे महान आश्चर्यकर्म है।

मेहरबानी से इसकी सूचना ले : परमेश्वर आत्मा है। जिस प्रकार से हम सब पहले आदम की संतान के रुप पैदा हुए है, उसी प्रकार हम सब "पाप में" मरे हुए - यानि आत्मिक रीति से मरे हुए पिता से आत्मिक मरी हुई संतान के रुप में पैदा हुए। **इसलिये हम अपने परमेश्वर के आपको** परमेश्वर के क्रोध और अनन्त नर्क से नहीं बचा सकते। जिस प्रकार से मृत शरीर कुछ नहीं कर सकता उसी प्रकार जब हम आत्मिक रीति से मृत है, तो हम भी कोई भला कार्य या धार्मिक काम जिससे पवित्र आत्मा को खुशी होगी **नहीं कर सकते**। बायबल इस प्रकार से कहती है कि हमारे धार्मिक कार्य परमेश्वर के आगे मैले चिथड़ों के समान है। हम सभीं पाप के कारण अशूध्द हो चुके है और स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य नहीं हैं। पाप की वजह से, सभी लोग नर्क में जाने के लिये ब्याध्य है; यहीं वह योग्य स्थान है जो हमारे धर्म के कामों के लिये है और कोई भी कलीसिया या कलीसिया के लोग हमें नहीं बचा सकते। नर्क की आग से कोई भी मनुष्य हमें नहीं बचा सकता, **लेकिन केवल यीशु हमें बचा सकता है!** परमेश्वर जो दया और अनुग्रह का धनी है, अपने प्रेम के खातिर जिससे उसने प्रेम किया उसके द्वारा और अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा हमें उध्दार (छुटकारा) दिया है। - जो पुरी रीति से मुफ्त का वरदान है - जिसे हमें विश्वास के द्वारा हासिल करना है! (यूहन्ना 3:16, 4:24; इफिसियों 2:1; कुलुस्सियों 2:13; यशायाह 64:6)

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उध्दार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, बरन् परमेश्वर का दान है। और न कर्मो के कारण ऐसा न हो कि कोई घमंड करे।" (इफिसियों 2:8-9)

प्रभु यीशु मसीह हमें बचाने और हम अयोग्य लोगों को योग्य बनानें आया है, **केवल यीशु ही स्वर्ग जाने का मार्ग है!** बायबल इस प्रकार से कहती है हम अपने आप से **स्वर्ग प्राप्त नहीं कर सकते**। यह परमेश्वर के अनुग्रह और यीशु मसीह के द्वारा दिया हुआ दान है। परमेश्वर की ओर से दिए गए दान को जो कोई भी इंकार करता है उसका नर्क में सर्वनाश होगा। (यूहन्ना 3:16)

याद रखें! बायबल कहती है, "और जैसे मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है..." (इब्रानियों 9:27) परमेश्वर ने हम में से हर एक के लिये एक मूलाकात नियुक्त की है कि हम उससे न्याय के दिन **व्यक्तिगत रुप से हूबहू** मिल सके ताकि जो कुछ हम इस पृथ्वी पर करते, कहते और सोचते है उसका लेखा वह हमें दे सके। इसके लिये कोई अपवाद नहीं है! **इसमें से कोई भी छुट नहीं पाएगा!** परमेश्वर ने हमें चुनने के लिये स्वतंत्रता दी है कि हम यीशु का अंगीकार करें या उसे नकार दे। लेकिन अनन्तकालिन गंतव्य स्थान इस बात निर्भर करता है कि अभी हम किस प्रकार का फैसला करते है, इसलिये बुध्दिमानी से फैसला करें और आज इस प्रकार का जीवन बिताए जैसे कल आपको परमेश्वर के आगे खड़े रहना है!

जब हम भोजन तैयार करते हैं, तब हम उसे चखते है और इस बात की निश्चिती करते है कि दूसरों को परोसने से पहले वह अच्छा हो। इसी प्रकार से, मैंने प्रभु यीशु मसीह के प्रेम और अनुग्रह को चखा है और पाया है कि वह बहुत भला है। इसलिये मैं आपको हौसला देना चाहता हूँ कि आप यीशु को निचे दिए गए छोटे वाक्यों के द्वारा अपने दिल में आमंत्रित करेः

परमेश्वर, अब मैं यीशु को मेरा प्रभु और उध्दारकर्ता के रुप में अंगीकार और ग्रहण करता हूँ। मैं विश्वास करता हूँ, यीशु ने मेरे पापों के लिये अपना पापरहित बहूमुल्य लहू बहाया और मुझे बचाने के लिये मेरे स्थान पर मारा गया। यीशु मसीह गाड़ा गया और वचन के अनुसार परमेश्वर ने उसे तिसरे दिन मृतकों में से जिलाया। मैं पापी हूँ और मेरे पापों के लिये मुझे खेद है। मेहरबानी से मेरे पापों को माफ कर और यीशु के लहू के द्वारा मुझे धोकर शूध्द कर। प्रभु यीशु, मेहरबानी से मेरे दिल में आए। अब, मेहरबानी से मुझे अपनी पवित्र आत्मा से भर और मुझे हर सच्चाई में अगुवाई कर। प्रभु यीशु मुझे बचाने के लिये धन्यवाद।

यदि आप यीशु को अपने जीवन में अपना प्रभु और मुक्तिदाता ग्रहण करने से पहले मर गए, तब आप कभी न बुझनेवाली, कभी न खत्म होनेवाली नर्क की आग में **हमेशा** के लिये खो गए है। यह नए जन्म की जरुरत की गंभीरता है!!! यह मनुष्य जाति को बचाने का परमेश्वर का अपनी और एकलौती योजना है और किसी कलीसिया या धर्म की नहीं है। जिस प्रकार से अब आप इस सच्चाई और उसकी गंभीरता को जानते है कि जिस किसी के पास भी यदी यीशु नहीं है तो वह नर्क में जाएगा, मैं आपसे बिनती करता हूँ कि आप अपने सभीं प्रिय मित्रों, रिश्तेदारों को सारा का पत्र **फोन** या **ईमेल** या **ट्विटर** या **फेसबुक पर** पोस्ट कर भेजें। हर किसी को स्वर्ग में जाने में अपना हर संभव कोशिश करें। **यीशु जल्दी आ रहा है...**

प्रिय भाई/बहन, मेहरबानी से मुझे sarah@his-amazing-love.org ताकि जिस प्रकार से आज आपने यीशु को अंगीकार किया है वैसे ही (इस पत्र के माध्यम से) मैं भी आपके साथ खुशी मना सकूं।

नया जन्म यह आपका आत्मिक जन्म दिन है! मेहरबानी से इस तारिख को अपनी बायबल या और किसी स्थान में लिख ले ताकि उसे बाद में आप याद कर सके और बाद में यीशु को धन्यवाद दे सको। यदि कोई आपसे पूछता है, "क्या आपका उध्दार हुआ है या आप बचाए गए हो?" कहे, "उसके अनुग्रह से हाँ, हुआ है," परमेश्वर आपको बहुतायत से आशीष दे।

"मैंने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिये लिखा है, कि तुम जानों, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है।" (1 यूहन्ना 5:13)

हमारे स्वर्गीय पिता का प्रेम, हमारे प्रभु यीशु मसीह की शांति और अनुग्रह और पवित्र आत्मा की संगति हमेशा आपके साथ भी रहे। आमिन।

मसीह में आपकी,

सारा

- दया और अनुग्रह क्या है?
- सुसमाचार क्या है – वह क्यों अच्छा है?
- पश्चाताप असल में क्या है?
- क्या परमेश्वर ने हमारे लिये पहले ही से स्वर्ग और नर्क नहीं तय किए है?
- क्या हम कभी बिना मृत्यु के स्वर्ग जा सकते है?
- मुझे बचाने के लिये प्रभु यीशु को क्यों मरना पड़ा?
- परमेश्वर के क्रोध, पाप और नर्क से बचाने के लिये यदि यीशु मेरे लिए मरा, तब मैं पहले ही से बचाया गया हूँ, नहीं? तब मुझे और बचने या नया जन्म लेने की क्या जरुरत है?
- क्या हम पाप में या पापरहित पैदा हुए?
- यदि हम सब पाप में पैदा हुए हैं, तब सब बच्चें मृत्यु के पश्चात कहां जाएंगे?
- क्या हम परमेश्वर को अपने भले या धर्मी कार्यो से प्रसन्न कर स्वर्ग प्राप्त कर सकते हैं?
- क्या अनन्त न्याय मृत्यु के पश्चात है?
- यदि न्याय के दिन हमारे बुरे कार्य हमारे भले कार्यो पर भारी पड़ते हैं, तब क्या होगा?
- यदि आज रात आपकी मृत्यु होती है, तब क्या आपके पास किसी बात की निश्चिती है कि आप नर्क में नहीं जाओगे?
- क्या मृत्यु के पश्चात परमेश्वर आपके पापों को दूर करेगा और तब आपको स्वर्ग में खिंचेगा ताकि अभी आप इस संसार में "जैसी चाहते है" वैसी जिन्दगी जियो?
- क्या उध्दार के लिये पानी का बपतिस्मा जरुरी है?

आपके सवालों के संक्षिप्त जवाबों के लिये आप

सारा के पत्र का दूसरा भाग पढ़ सकते है...

जो जल्द आ रहा है !